श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्बोधन

वनस्थली विद्यापीठ का वार्षिक उत्सव

दिनांक – 21 नवम्बर, 2019 **समय प्रात : 11 बजे**

विश्वविद्यालय परिसर , निवाई

वनस्थली विद्यापीठ की अध्यक्ष, प्रो. चित्रा पुरोहित, उपाध्यक्ष, प्रो. सिद्धार्थ शास्त्री, कुलपति प्रो. आदित्य शास्त्री, सहकुलपति प्रो. ईना शास्त्री, कोषाध्यक्ष प्रो. सुधा शास्त्री, विद्यापीठ परिवार के समस्त सदस्यगण और होनहार छात्राओं।

वनस्थली विद्यापीठ का स्वर्णिम इतिहास रहा है। राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पंडित हीरालाल शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतन शास्त्री ने इसकी स्थापना तब की थी, जब बालिका शिक्षा के प्रति लोग जागरूक नही थे। उनका यह सराहनीय प्रयास आज बालिका शिक्षा का वट वृक्ष बन गया है इसके लिए आप सभी को बधाई देता हूं।

मुझे बताया गया कि उस वक्त संस्थापकों को घर–घर जाकर बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रेरित करना पड़ता था और घर–घर जाकर दान एकत्रित कर वनस्थली का संचालन करना होता था।

मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि आरंभिक दशकों में तो छात्राओं से कोई शिक्षण शुल्क भी नहीं लिया जाता था।

उस समय महिला शिक्षा की संकल्पना ही नहीं थी पर वनस्थली ने कुछ ही वर्षो में अपनी छात्राओं को घुड़सवारी करना और ग्लाईडर में बैठकर आसमान में उड़ना सिखा दिया। ग्रामीण अंचल में स्थापित इस विद्यापीठ ने शास्त्री दम्पत्ति और उनके सहयोगियों के अथक परिश्रम एवं अटूट निष्ठा के कारण महिला शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागृति व स्वावलम्बन की भावना विकसित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

यहाँ की शिक्षा पंचमुखी है, अर्थात् बौद्धिक, व्यावहारिक, कलात्मक, नैतिक एवं शारीरिक शिक्षा के संयोजित स्वरूप से प्रत्येक छात्रा के व्यक्तित्व को निखारने का सर्वांगीण प्रयास किया जाता है। यह बालिकाओं के विकास के लिए आवश्यक है।

केवल मात्र 5 छात्राओं से आरम्भ हुआ विद्यापीठ आज महिलाओं का बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय बन गया है। वनस्थली में छात्राओं में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने व चरित्र निर्माण पर बल दिया जाता है।

वनस्थली विद्यापीठ परम्परा व आधुनिकता के सम्मिश्रण का अप्रितम उदाहरण है। महिला शिक्षा को समर्पित वनस्थली विद्यापीठ ने राजस्थान का नाम प्रदेश भर में ही नहीं पूरे देश में रोशन किया है। उच्च राष्ट्रीय रैंकिग प्राप्त कर वनस्थली ने देश में राजस्थान का मान बढ़ाया है। क्वाक्रैली सिमण्ड्स (QS) जो विश्वविद्यालयों को रैंकिंग देने वाली सबसे विश्वसनीय एजेंसी है, उसकी BRICS व ASIA रैंकिंग में अपनी जगह बनाने के लिए विद्यापीठ परिवार और समस्त छात्राएं बधाई की पात्र है। प्राचीन युग में भारत शिक्षा का शक्तिपीठ था। उच्च शिक्षा में भारत वर्तमान युग में एक शक्ति बनने के प्रयास में है। हमारे देश को उच्च शिक्षा के शिखर पर आप पहुँचायेंगे, यह मेरा विश्वास है।

विद्यापीठ द्वारा महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके संस्थापक, हमारे देश की प्राचीन संस्कृति और वर्तमान स्थिति में समाज में महिलाओं के स्थान और सहभागिता से पूर्णतया परिचित थे। वे जानते थे कि हमारे देश की पुरातन वैदिक संस्कृति

में नारी और पुरूष में कोई भेद नहीं था। पुरूष और स्त्री को समाज में बराबर स्थान प्राप्त था।

मुझे आज वनस्थली विद्यापीठ के सुरम्य और प्राकृतिक वातावरण में छात्राओं की विविध गतिविधियों को देखने का सौभाग्य मिला। यहाँ की विशिष्ट पंचमुखी शिक्षा प्रणाली पर आधारित शिक्षा द्वारा छात्राओं के सर्वांगीण विकास को देखकर मैं अभिभूत हूँ। हमारे देश में बहुत सी बालिकाएँ सामाजिक–आर्थिक विवशताओं के कारण पढ़ नहीं पाती हैं। जिन बालिकाओं को पढ़ने का मौका मिल रहा है, वे भाग्यशाली हैं और वनस्थली जैसे उच्च कोटि के संस्थानों में पढ़ने वाली बालिकाएँ तो और भी भाग्यशाली हैं।

शिक्षा का उद्देश्य, छात्रा को नौकरी या रोजगार के योग्य बना देने के साथ ही चरित्र–निर्माण भी अत्यन्त आवश्यक है। अच्छे चरित्र से ही समाज और देश को बदला जा सकता है। यहां छात्राओं को आज की विषम परिस्थितियों से लड़ने के लिए तैयार किया जाता है।

विद्यापीठ जैसी शिक्षण संस्थानों से ही समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। यहाँ पढ़ने वाली छात्राएँ ही समाज को बदलेंगी, ऐसा मुझे विश्वास है। वनस्थली विद्यापीठ ने महिला शिक्षा के एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में ख्याति अर्जित की है। इसका उद्देश्य पूर्व और पश्चिम के आध्यात्मिक मूल्यों तथा वैज्ञानिक दृष्टि को साथ लेकर चलना है।

विज्ञान को विद्वानों ने अलग–अलग रूप में परिभाषित किया है। ज्ञानेश्वर ने ज्ञान को 'ब्रह्माज्ञान' या 'आत्मज्ञान' कहा है जो आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित है। शेष विश्व के ज्ञान को उन्होंने विज्ञान कहा है।

हमें भौतिक विकास के लिए विज्ञान एवं तकनीकी की आवश्यकता है परन्तु आध्यात्मिक विकास के लिए ब्रह्मा ज्ञान की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में वनस्थली विद्यापीठ के प्रतीक चिह्न में उल्लिखित (**सा विद्या या विमुक्तये**) समसामयिक हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि वनस्थली विद्यापीठ में भारत के लगभग सभी राज्यों की छात्राएँ प्रवेश लेती हैं एवं विदेशों से भी विद्यार्थी ज्ञानार्जन व भारतीय संस्कृति के परिचय हेतु आते हैं। आज इस समारोह में मैंने जो कुछ देखा उससे लगता है कि यहाँ सम्पूर्ण भारत की छवि देखी जा सकती है।

आज ऐसा समय है जब वैश्विक स्तर पर सबको मिलकर चलना होगा। निरन्तर प्रतिस्पर्धा के इस दौर में नए दक्ष एवं योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता भारतीय अर्थ–व्यवस्था के लिए है। भारत का युवा वर्ग इस आवश्यकता की पूर्ति में सक्षम है।

हमें उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता पर आधारित तकनीकी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना होगा। हमारा लक्ष्य विश्व के बाज़ार के अनुरूप शिक्षा में व्यावहारिक तकनीकी बदलाव करना है ताकि भारतीय योग्य युवा वर्ग अपना विकास कर सकें तथा देश के विकास में योगदान दे सकें।

विद्यापीठ परिसर का सादा जीवन छात्राओं में आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करने के साथ उन्हें भौतिकवाद से परे रहने को जरूर प्रेरित करता होगा। विद्यापीठ की छात्राएँ अपनी संस्कृति व सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ उच्चस्तरीय वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान को लेकर समाज में प्रवेश करती हैं। विद्यापीठ के शैक्षणिक कार्यक्रमों में छात्राओं के बहुमुखी विकास को दृष्टि में रखना और परिसर की दिनचर्या छात्राओं को रूचि एवं रूझान के अनुरूप विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान करती होगी। परिसर में होने वाली गतिविधियों में छात्राओं की व्यापक सहभागिता, सराहनीय है।

यहाँ की कई छात्राएँ राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, चिकित्सक, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कलाकार एवं शिक्षक आदि बनी हैं। विगत 82 वर्षो के अपने स्वर्णिम इतिहास में विद्यापीठ ने प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को नेतृत्व के लिए तैयार किया है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में यहाँ की छात्राओं ने परचम फहराया है।

मुझे बताया गया है कि विद्यापीठ ने सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन को भी अपना प्रमुख लक्ष्य माना है। विद्यापीठ में समय–समय पर चलने वाली परियोजनाओं से आसपास के ग्रामीण क्षेत्र लाभान्वित होते रहे है। यहाँ का कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों को उचित मार्गदर्शन देता है तथा आपाजी आरोग्य मंदिर उच्चकोटि चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करता है। सामुदायिक रेडियों स्टेशन द्वारा 30 कि.मी. की परिधि में जनजागरण के कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित किये जाते हैं। ये प्रशंसा की बात है।

स्वच्छ भारत मिशन, दक्षता एवं कौशल विकास एवं डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजनाएँ हैं। आज वनस्थली में आकर इन तीनों योजनाओं को साकार होते हुए देख रहा हूँ। वनस्थली का सुरम्य वातावरण स्वच्छता का अप्रतिम उदाहरण है। यहाँ पर कौशल विकास के कार्यक्रम भी चल रहे हैं। परिसर में महिलाएं खादी ग्रामोद्योग से जुड़कर स्वावलंबी बन रही हैं।

डिजिटल इंडिया भारत सरकार का विज़न हैं। मुझे बताया गया कि यहाँ कि अटल इनक्यूबेशन सेंटर भी है जिसका जिक्र भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने भाषण में करते हुए जनता को बताया था कि किस प्रकार वनस्थली नवोन्मेष का प्रतीक है और वर्षो से महिला शिक्षा और सशक्तिकरण का केन्द्र बना हुआ है। परम्परा और आधुनिकता का अपूर्व समन्वय यहाँ देखने को मिला है।

विद्यापीठ ने यह जो प्रगति की है उसके लिए विद्यापीठ परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। विद्यापीठ में जो नये क्षेत्र छात्राओं के लिए खोले गए उससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यापीठ अपने वैश्विक घटनाक्रम के प्रति काफी सजग है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राएँ समाज में नेतृत्व कर देश के विकास में अहम योगदान देंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं यहाँ की सभी

छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य और वनस्थली विद्यापीठ की निरन्तर प्रगति की मंगलकामना करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।